International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 25-12-2020; Accepted: 12-01-2021; Published: 02-02-2021
Volume 3; Issue 1; 2021; Page No. 05-08

श्रीधर पराडकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अमित उपाध्याय[1], डॉ माधुरी गर्ग[2]
[1] शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] सहायक प्राध्यापक, हिंदी शासकीय तिलक, स्नातकोत्तर महाविद्यालय कटनी, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
श्रीधर पराडकर हिंदी लेखकों में एक मजबूत कलाकार हैं नई कहानी के उन कहानीकारों में से हैं जब हम हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध साहित्यकार श्रीधर पराड़कर के स्तंभो की चर्चा करते है तो इनका नाम बड़े गर्व और संम्मान के साथ के लिया जाता है। हिंदी साहित्य में परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए लेखक के रूप में श्रीधर पराडकर को रखा जाता है। श्रीधर पराडकर के व्यक्तित्व और कृतित्व में जीवन के बारे में प्रकाश डाला है उनके पुस्कार और सम्मान की चर्चा की है भाषा का प्रभाव कैसा रहा है। उनकी रंचना का साहित्य में क्या स्थान था श्रीधर पराडकर की साहित्य सेवा कैसी रही है।

मुख्य शब्दः श्रीधर पराडकर, व्यक्तित्व और कृतित्व, श्रीधर पराडकर की विचारधारा, बाल साहित्य, साहित्य मे स्थान, साहित्य–सेवा

प्रस्तावना
किसी भी साहित्यकार के विचारों और आदर्शों को समझने और जानने में उनका जीवन और व्यक्तित्व आधार भूमि के रूप में कार्य करता है। इसलिए मानव जीवन की दिशा निर्धारित करने और इसे एक अद्वितीय आकार देने में, पैतृक, पारिवारिक, आयु पुरानी, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि स्थितियों और उनकी मूल प्रवृत्तियों में पर्याप्त हाथ है। कोई भी लेखक के व्यक्तित्व के बारे में जानने के लिए उसके जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उसकी मूल प्रवृत्तियों और रुचियों आदि के बारे में जानना आवश्यक है। इसलिए, उनके जीवन में प्रवेश करने से पहले उन्हें अपने साहित्य के मूल में लाना अनिवार्य है। एक व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके जीवन का एक अभिन्न पहलू है, जिसमें से एक पक्ष का अध्ययन दूसरे पक्ष के अध्ययन के अभाव में अधूरा रहता है। लेखक का स्वभाव एक ओर उसके व्यक्तित्व का प्रतिबिंब होता है, वहीं दूसरी ओर उसका व्यक्तित्व सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समय के अनुसार होता हैं। साहित्यकार युग और सृष्टि को भी प्राप्त करता है। एक ओर वह अपने युग में परिवर्तन, समस्याओं आदि पर नजर रखता है और अपने साहित्य के माध्यम से एक नए युग का निर्माण करने में मदद करता है। वास्तव में साहित्य का उद्देश्य क्रांति लाना है। इस तरह साहित्य की शुरूआत को निजी दृष्टिकोण से उचित परिचय दिया गया। उन्हें अपने साहित्य को समझने और उनका विश्लेषण करने में मदद मिलती है। किसी भी कलाकार को समझने के लिए, उसके द्वारा प्रस्तुत कलाकृति का अध्ययन करना आवश्यक है। उस रचना का सर्वांगीण अध्ययन कलाकार की कलाकृति का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होता है। प्रत्येक कलाकार एक धागे में अपने सुख और दुःख के क्षणों को प्रस्तुत करता है। इसमें कलाकार का बोध, मुख्य चरित्र प्रकाश में आता है। साहित्यकार भी एक कलाकार होता है। वह साहित्यिक कला का सृजन करता है। वह इस रचना के माध्यम से साहित्य के निर्माण की प्रक्रिया के माध्यम से अपने कठिन अनुभवों को व्यक्त करता है। अर्थात साहित्यकार का व्यक्तित्व और कृतित्व अनुभावों के कार्य के माध्यम से सामने आता है। इसलिए श्रीधर पराडकर के रचना संसार को समझने के लिए उनके संपूर्ण जीवन यानी व्यक्तित्व और कृतित्व को समझना आवश्यक है।

जन्म और बचपन
स्वतंत्र भारत के जाने–माने हिंदी लेखक श्रीधर पराडकर का जन्म 15 मार्च 1954 ई.को मध्य प्रदेश जिला ग्वालियर मे हुआ। इनके पिता स्व. श्री गोविन्दराव पराडकर एंव माता का नाम स्व.इंदिरा बाई पराडकर था श्रीधर पराडकर के भाई का नाम श्री मुकुन्द शंकर पराडकर है। इनका जन्म संयुक्त परिवार मे जन्म लेने से वे नातो–रिश्तो को निभाना बखूबी जानते है श्रीधर पराडकर के बचपन का विवरण बहुत ही कम उपलब्ध है क्योंकि उनका मानना है कि एक कलाकार का व्यक्तित्व, उसका परिचय और उसका विश्वास और उसकी प्रतिबद्धता उसकी सारी कला है। इसका महत्व और मूल्य क्या है? और क्यों है? श्रीधर पराडकर शुरू से ही तेजतर्रार रहे हैं। शिक्षा पूर्ण करने के बाद एकाउन्टेन्ट जनरल कार्यालय मे ऑडीडर के पद पर इन्होने नौकरी प्रारंभ किया वे बचपन मे ही श्री राजेन्द्र टेम्बे के सम्पर्क मे आकर संघ शाखा मे जाने लगे थे। लेकिन उसने अपनी बौद्धिकता और मानसिक गतिविधियों को बढ़ाकर इस कमी को पूरा किया। किशोरावस्था की तरह किशोरावस्था का भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में असाधारण महत्त्व है। श्रीधर पराडकर के जीवन में भी इस अवधि का विशेष महत्त्व रहा है। उन्होंने एक जगह लिखा कलाकार अपनी किशोरावस्था में अपनी वास्तविकता से असंबद्ध नहीं हो सकता था, वह या तो इसे लेता है या इसे सही ठहराता है, और जीवन भर कला के नाम पर आत्मकथा के टुकड़े कर देता रहता है।

व्यक्तित्व
हिंदी कथा साहित्य में श्रीधर पराड़कर का विशेष और महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जीवन को सच्चे अर्थों में जीना एक बात है, और इस बारे में बराबर बात करते रहना चाहिए। प्रतिभा के प्रतिमान सम्मान होना चाहिए जैसा कि श्रीधर पराड़कर ने जीवन को देखा, जाना और समझा है, वह उनके व्यक्तित्व की पंक्तियों ने स्पष्ट कर दिया है। वह एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी हैं जिसके लिए जीवन जीने के कर्म की परिभाषा है उनका व्यक्तित्व प्रतिभा और गहरी आस्था के साथ सचेत हो गया है। वास्तव में साहित्यकार श्रीधर पराड़कर, जिनके पास एक जीवंत व्यक्तित्व है,

हिंदी साहित्य जगत का एक प्रमुख आधार रहा है। लेकिन एक प्राकृतिक विशेषता है, जीवन के अनंत के अनुभवों को बाँध के रखा है जैसा कि वे स्वयं अपनी कलम से लेखन करते हैं। पूर्वजों की विरासत भारतीयता की मस्ती से भरी एक पूरी किंवदंती है, जो देश की परंपराओं को संरक्षित करती है। वह एक ऐसे महापुरुष हैं जिनकी संपूर्णता को संपूर्ण मानवता की प्राप्त करती है। जीवन में संघर्ष के पथ के व्यक्तित्व को बनाने वाले व्यक्ति का नाम, देशंतार, मध्य भारत की संघ गथा, ज्योति जल निजा प्राणकी, साहित्य में आदि ऐसे महान व्यक्ति ने अपनी कलम से लेखन किया हैं। श्रीधर पराड़कर ने न केवल व्यक्ति और समाज को मानव संबंधों से जोड़ा और मानवतावाद की भूमिका को छुआ है, बल्कि कर्म और आनंद जाना है और चेतना, धर्म और नैतिकता, भारतीय संस्कृति और संपूर्ण व्यापक समस्याएं का प्रश्न भी हैं। बल्कि हम गहन रूप से चौकस और तटस्थ पर्यवेक्षकों और एक रचनाकार हैं, जिनका मानव भविष्य की ओर अग्रसर चेतना के साथ भविष्य की ओर देख रहा है और समाज को जागरूक कर रहा है, श्रीधर पराड़कर के विषक्त व्यक्तित्व को निम्नलिखित बिंदुओं से उजागर किया गया है। जिस पर चर्चा करने की आवश्यकता है, व्यक्तित्व वास्तव में व्यक्ति की एक सांकेतिक संज्ञा है, इसलिए किसी व्यक्ति के क्षेत्र में शामिल किए जाने वाले सभी गुणों और विशेषताओं को केवल व्यक्तित्व के तहत ही लिया जा सकता है। लेकिन व्यक्तित्व को पूरी तरह से मापना और उनके मूल्य का निर्धारण हमेशा एक असाध्य समस्या रही है।

कृतित्व

श्रीधर पराड़कर साहित्यिक सम्मेलनों में एक प्रेरणा के रूप में दिशा प्रदान करते हैं क्योंकि वे सभी एक साथ रचनाकार नियामक, विचारक हैं। 26 अप्रैल, 2017 को केंद्रीय भारतीय हिंदी साहित्य सभा में श्रुति परंपरा से पुस्तक विमोचन कार्यक्रम और साहित्य को चिह्नित करके, शब्द की शक्ति को बढ़ाया है मध्य भारत के साहित्य की भाषा को गति मिली है लगभग 115 साल पुराना, काका, विभिन्न भाषाओं, बोलियों, गैर–हिंदी भाषी क्षेत्रों के साधक, काका के मार्गदर्शन में, अपने शोध लेखों को पढ़ने के लिए ग्वालियर आये, साथ ही सृजन के क्षेत्र में उभरते लोगों के लिए भी ग्वालियर में हिंदी साहित्य की इंगित कविता और कथा संगोष्ठियों के प्रकाशन के साथ साहित्य फल–फूल रहे है। श्रीधर पराड़कर का मानना है कि आज की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने युवा पीढ़ी को साहित्य से अलग कर दिया है। काका साहित्य परिवर्तन को मुख्य रूप से मानते हैं क्योंकि समय, समाज, मीडिया के प्रभाव ने प्रगतिशील साहित्यकारों द्वारा भारतीयता, समाजशास्त्रीय मूल्यों को भ्रमित, प्रोत्साहित और अपमानित करते हुए यथार्थवाद के नाम पर ऐसा साहित्य रचा है कि सबसे पहले भारतीय संस्कृति और साहित्य को आधार बनाया गया है। समाज के रीति–रिवाजों और सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न परंपराओं के बीच मानवीय रिश्तों के ताने–बाने के बीच की भावनाएं को समझा है साहित्यकारों ने साहित्य की रचना की यह आम जनता के संबंध में बहुत उच्च–स्तरीय था, लेकिन उनमें से सबसे बड़ी कमी समाज के विभिन्न पहलुओं के प्रति सामाजिक दायित्वों और युवाओं के मानव–संबंधित संस्कारों को जन्म देने में सक्षम नहीं है। हमारा साहित्यकार रुदाली जैसा नहीं होना चाहिए बल्कि करुणा और हृदय का वाहक होना चाहिए। साहित्य की शुरुआत वेदों से हुई। यह बात अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रीधर पराड़कर ने कही। वह रविवार को साहित्य सभा भवन में केंद्रीय भारतीय हिंदी सभा द्वारा आयोजित व्याख्यान में बोल रहे थे। इस दौरान उन्होंने साहित्य की मौखिक परंपरा को मौलिक और सामाजिक बताया। कार्यक्रम का विषय भारतीय साहित्य की परंपरा थी। इसी क्रम में श्रीधर पराड़कर ने अपने साहित्य में पुस्तक लिखी है। श्रीधर पराडकर की अब तक प्रकाशित पुस्तकें निम्नवत है

- मध्यभारत की गद्य गाथा,
- ज्योति जला निज प्राण की,
- खण्डोबल्लाल,
- पथिका ,
- देशान्तर ,
- हॉफलांग अंडमान
- परम हंस स्वामी रामतीर्थ जी महाराज
- राष्ट्रसंत तुकड़ोजी, सिद्धयोगी
- स्वतंत्रता संग्राम के प्रतिसाद
- कर्मयोगी बाबा साहब आपटे,
- अप्रतिम क्रान्तिद्रष्टा भगत सिंह
- डॉ अम्बेडकर सामाजिक क्रान्ति की यात्रा

सभी गद्य संग्रहों के अतिरिक्त कुछ अन्य गद्य संग्रह भी प्रकाशित हुए है।

सम्मान एवं पुस्कार

श्रीधर पराड़कर को भोपाल में सम्मानित किया गया सम्मानित कार्यक्रम असेम्बली हॉल में हुआ। विधानसभा अध्यक्ष सीतासरन शर्मा ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए अपने संबोधन में कहा कि उन्होंने जो लिखा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने उन्हें लिखने के लिए कहा, इसलिए उनके साहित्यकार होने के कारण यह एक बड़ी बात है। ग्वालियर के गौरव श्रीधर पराड़कर जिन्होंने हाल ही में ग्वालियर में हिंदी साहित्य को बढ़ावा दिया, और विवेकानंद पुरस्कार से सम्मानित किए जाने के बाद राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा हिन्दी साहित्यकार पुस्कार से सम्मानित किया गया। हरियाणा के गवर्नर प्रो.कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा है कि बिना लगाव के जीवन जीने और आगे बढ़ने का लक्ष्य यही है कि लोग समाज में अपनी अलग पहचान बनाएं। जीवन में एक लक्ष्य निर्धारित करना उनके लिए अपने पूरे जीवन को जीना मुश्किल काम है। उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज के कार्यों के लिए समर्पित कर दिया है। हम सभी को अपने कार्यों को सामने रखकर अपने जीवन में समान कार्य करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में उत्तम स्वामी ने कहा कि दुनिया में कई तरह के काम होते हैं। साहित्य दान भी उनमें से एक श्रीधर पराडकर है। श्री पराड़कर ने साहित्य के माध्यम से समाज में एक ऊर्जा पैदा करने का सराहनीय काम किया है। उन्होंने कहा कि हर कोई अपने परिवार के लिए नहीं करता है, लेकिन जो लोग समाज के लिए जीते हैं वे लंबे समय तक समाज का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ग्वालियर के श्रीधर पराड़कर ने इसे अपने जीवन में उतारकर एक मिसाल कायम की है। श्रीधर पराड़कर को विश्व हिंदी सम्मान में ''काका'' नाम सें सम्मानित किया गया। अभिनंदन देश के विख्यात साहित्यकार अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रीधर पराड़कर को समाज के प्रति समर्पण, साहित्यिक लेखन और हिंदी के प्रचार–प्रसार में योगदान के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया विश्व हिंदी सम्मेलन में भारत के विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने यह सम्मान दिया।

श्रीधर पराडकर की विचारधारा

श्रीधर पराड़कर की छात्रवृद्धि साहित्य के निर्माण में प्रबुद्ध हो गई है। साहित्यिक मामलों में उनकी दृष्टि स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ने की गवाही देती है। उनकी अपनी अलग शैली और विचारधारा है जो उनके अद्वितीय व्यक्तित्व को दर्शाती है। एक रचनाकार के तहत उनकी विचारधारा आम लोगों से कुछ अलग होती है। लेखक की विचारधारा का प्रभाव उसके कार्यों में परिलक्षित होता है। इसके संबंध में श्रीधर पराड़कर का कथन सही है कि – विचारधारा सूर्य के समान है। यदि आप चौबीस घंटे सूर्य की परिक्रमा करते हैं, तो आप अंधे हो जाएंगे।

सूरज की रोशनी से रोशन होने वाली चीजों को देखें। सूरज की रोशनी के बिना जीवन काम नहीं करता है। आप नहीं लिख सकते, विचारधारा के बिना कुछ भी नहीं जान सकते हैं कि आपके पास एक विचारधारा है। साहित्य का मुख्य लक्ष्य को पार करना है। केवल हिंदी कहानी नहीं दुनिया का कोई भी साहित्य यह मार्क्सवाद के प्रभाव से अछूता नहीं है। दुनिया भर में सर्वश्रेष्ठ बीसवीं सदी साहित्य केवल मार्क्सवाद के प्रभाव में या उससे लड़कर लिखा गया है।

श्रीधर पराड़कर ने बाल साहित्य के रूप को चुना

बच्चों के साहित्य को बाल मनोविज्ञान को समझना और निर्माण करना कितना महत्वपूर्ण है, यह इस संदर्भ में है कि बच्चों के साहित्य को चुना गया है कि बच्चे की बुद्धि और ज्ञान की गहराई का वातावरण कैसा हो। अवशोषित, अपनी गहराई के तथ्यों को समझता है और समझता है कि कौन इसे याद रखता है और कौन इसे जानता है और कौन समझ सकता है। अगर किसी भी बाल साहित्यकार के पास बच्चों के लिए कहानियां हैं, तो कहानी दिलचस्प होनी चाहिए। यदि कोई लेख है, तो यह प्रेरणादायक होना चाहिए और अगर कोई कविता या गीत है, तो उसमें फूलों की खुशबू होनी चाहिए। यदि बाल साहित्यकार बच्चों के मनोविज्ञान और उपर्युक्त बिंदुओं और विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए काम करते हैं, तो ऐसे काम न केवल बच्चों के साहित्य के लिए मील के पत्थर होंगे, बल्कि इस तरह से स्वस्थ समाज और संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन के लिए भी काम करेंगे। मुझ में आम धारणा यह है कि बच्चों की कहानियाँ, कविताएँ लिखना बहुत आसान है, लेकिन इसके लिए बहुत बुद्धिमत्ता की आवश्यकता नहीं है। कुछ बाल लेखक पाठ को साहित्य मानते हैं, लेकिन यह एक गलत धारणा और भ्रामक धारणा है। यह आवश्यक है कि बच्चों का साहित्य बहुत बौद्धिक हो और रचना संक्षिप्त के बजाय नीरस होनी चाहिए। मन को एक बोझ महसूस कराएं बच्चों का साहित्य ऐसा होना चाहिए जो बच्चों का मनोरंजन करे और ज्ञान भी बढ़ाए। गुण की भूमिका और रचना जो भी हो, जो कुछ भी है, वह कल्पना पर आधारित नहीं होना चाहिए, लेकिन कल्पनाएँ उन्हें जीवन में उड़ान भरने के लिए प्रेरित करती हैं, लेकिन उन्हें वास्तविकताओं से परिचित नहीं कराती हैं। इसलिए, बाल कहानियों में लोक कथाओं, दंत कथाओं और शास्त्रों का एक टुकड़ा होना चाहिए ताकि यह दिलचस्प हो और साथ ही जीवन की सच्चाइयों के साथ काम कर सके। मेरा मानना है कि रचना वह सर्वोत्तम है जो पाठक के मन में विचार उत्पन्न करती है। उसकी जिज्ञासा को शांत करने और ध्यान प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए, उसके मन को प्रसन्न रखें। कविताएँ ऐसी होनी चाहिए, जिन्हें पढ़ने के बाद समझा जा सके और मन में बैठाया जा सके जिसे जीवन के लिए मन और मस्तिष्क में बसा होना चाहिए। द्वारका प्रसाद माहेश्वरी, सुभद्रा कुमारी चौहान और श्रीधर पराड़कर जैसे शास्त्रीय साहित्यकार हैं जिन्हें उनके साहित्यकार के कारण जाना जाता है। अपने साहित्य के बारे में लोगों के मन में उनके प्रति जो श्रद्धा और सम्मान है, वह उन्हें प्रेरणा देता है, इसलिए साहित्यकार जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है। चलो बदलो। वह पत्थर का दर्शन करता है और कई शैलियों में, बाल गीत शैली कुछ वर्षों से बच्चों के साहित्य में प्रचलित है। शिशु गीत और बाल गीत और जीवन के हर तरीके के बीच अंतर एक नीति की तरह बदलता है। संचार क्रांति, सूचना प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण की अवधारणा ने लोगों की सोच को बदल दिया है। इसने जीवन के तरीके को तर्कसंगत रूप से सोचने के लिए मजबूर किया है। नई, आसान और सुलभ जानकारी और सूचनाओं और जिज्ञासाओं ने पुरानी सोच को प्रभावित किया है। यहां तक कि सबसे बड़ा बच्चा भी इन परिवर्तनों से अछूता नहीं रहा है। आज के बच्चे और किशोर जो आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग करने में कुशल और कुशल हैं, इस मामले में बहुत पीछे हैं। आज के बच्चों की बुद्धि चातुर्य से अनभिज्ञ नहीं है। पुरानी पीढ़ी की तुलना में हर नई पीढ़ी बीस नहीं उन्नीस है। इसलिए बाल साहित्य को बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए, इस अभिव्यक्ति को यहां पूरी तरह से समझा जाना चाहिए कि बच्चे कच्ची मिट्टी के सामन हैं। जिस तरह एक कुम्हार कच्ची मिट्टी को वांछित आकार देता है, उसी तरह एक बाल साहित्यकार, अपने लेखन में एक बच्चे के ज्ञान के साथ, महान व्यक्तित्वों, आत्मकथाओं, प्रेरणादायक अंशों के दिलचस्प और सुलभ लेखन का विषय होना चाहिए। हिंदी सीखने और अभ्यास करने के लिए जुनून और उत्साह बढ़ाएं, पाठ्यक्रमों में प्रतिभाशाली और मजबूत बाल रचनाकारों की रचनाएं शामिल होनी चाहिए। हिंदी के प्रति उत्साह और जिम्मेदारी को बनाए रखना लेखकों और कवियों की जिम्मेदारी है। बच्चों के साहित्य लेखन को उनकी श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए शालीनता या प्रयासों से प्रेरित नहीं होना चाहिए। केवल ऐसी रचनाएँ ही उपयोगी हैं, लंबे समय तक चलने वाली, ग्रहणशील, जीवनदायिनी, प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक, पूरी तरह से केंद्र में केवल बालमन के साथ बनी हैं। यह आवश्यक है कि बच्चों के साहित्य से बच्चों का ज्ञान बढ़ाना एकमात्र लक्ष्य नहीं होना चाहिए, बल्कि उनका मनोरंजन करना भी आवश्यक है।

भाषा का प्रभाव

श्रीधर पराड़कर ने हिंदी को एक नई कहानी भाषा दी है, उसी तरह हिंदी की नई सोच भाषा के विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। उनकी भाषा के सूक्ष्म से सूक्ष्म होने की क्षमता, उनकी छवियों या छवियों के लिए कविता की तरह, उनके शब्दों को संयम और मितव्ययिता उनके कथा रूपों में परिवर्तित करती है और दूरगामी पैटर्न की क्रमिक कमी या कमी का गवाह है।

रचना संसार

श्रीधर पराड़कर का साहित्यिक फलक बहुत विस्तृत है और उन्होंने पश्चिमी सभ्यता से संबंधित कई रचनाएँ कीं। उन्होंने उपन्यास कहानी नाटक निबन्ध संस्मरण और अंग्रेजी लेखकों की कृतियों का अनुवाद भी किया। उनकी रचनाओं में विस्तार का आधुनिक बोध दिखाई देता है। श्रीधर पराड़कर ने बड़े वातावरण में मनुष्य के अनुभव को देखा। आपने अनेक लोकप्रिय पुस्तकों की रचना कर हिन्दी साहित्य की अद्भुत सेवा की है। आपकी प्रमुख रचनाएँ/पुस्तक निम्नवत् है

'राष्ट्रनिष्ठ खण्डोबल्लाल, अप्रतिम क्रांतिद्रष्ठा भगतसिंह', रानी दुर्गावती, माँ शारदा, कर्मयोगी बाबा साहेब आप्टे, बाला साहेब देवरस, राष्ट्रसंत तुकडोजी, संत स्वामी रामतीर्थ, सिद्धयोगी उत्तम स्वामी, आदि।

साहित्य में स्थान

श्रीधर पराड़कर की पुस्तक हमारे राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक संवेदनाओं का संचार करती है। उन्हें केंद्रीय हिंदी संस्थान (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा भारतीय विद्या (इंडोलॉजी) में लेखन के लिए प्रतिष्ठित के लिए विवेकानंद पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जिन्होंने साहित्य के क्षेत्र में अपना योगदान सबसे आगे रखा। साथ ही आपको तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा हिंदी सेवी सम्मान 2015 से भी सम्मानित किया गया है।

साहित्य–सेवा

श्रीधर पराड़कर जिन्होंने अपनी कलम से राष्ट्रीय सम्मान को एक नई धार दी है, अखिल भारतीय हिंदी साहित्य परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री और देश के एक प्रसिद्ध साहित्यकार और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। श्रीधर पराड़कर जो साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति और मूल्यों और राष्ट्रीय प्रेम को जागृत कर रहे हैं इन्होंने इंग्लैंड, श्रीलंका आदि देशों के साथ–साथ भारत के कई स्थानों की यात्रा की जैसे कि जौनसार (उत्तराखंड), लाहौर स्पीति और झाबुआ की वनांचल साहित्य

यात्रा इस लिए कि है ताकि लेखक समझदार साहित्य का सृजन कर सके।

निष्कर्ष

श्री पराड़कर देश के प्रख्यात सहित्यकार और कार्यकर्ता थे। श्रीधर पराड़कर का व्यक्तित्व आकर्षक था। वे सात्विक ऊर्जा के स्रोत भी थे। उनके व्यक्तत्य का आकर्षण ऐसा है कि जो एक बार उनके संपर्क में आता है।, हमेशा क लिए उनका होकर रह जाता है। उनकी दो पुस्तकें 'ज्योति जला निज प्राणकी' और 'मध्यभारत की संघ गाथा' पुस्तक में शामिल अनेक प्रसंग बताते है। किस प्रकार संघ के कार्यकर्ताओं ने देश और समाज के हित में उपने प्रणों को भी बलिदान कर दिया। जहाँ देश की बात आई, वहाँ अपने प्राणो की चिंता न करते हुए संघ के कार्यकर्ता आगे आकर खड़े हो गए। हमारे समय में शिक्षाप्रद सहित्य के अगुवा बने काका श्रीधर पराड़कर को हिंदी की सेवा के लिए 'स्वामी विवेाकनंद सम्मान' देने की घोषणा हुई थी। यह हम सबके लिए सुखद अवसर था। उनका सम्मान हमारे लिए गौरव का विषय था। और काका को यह सम्मान वर्ष 2015 के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय के केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की ओर से प्रदान किया जा रहा था। जब राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी की ओर से काका को हिंदी सेवा सम्मान–2015 से सम्मानित किया था उस वक्त हम सब गौरव की अनुभूति कर रहे थे।

संदर्भ सूची

1. जीतेन्द्र सिंह,'श्रीधर पराड़कर ''काकाजी'' विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया', 2018।
2. रोहित पाठक, 'पर्यावरण बचाने के लिए संतुलन आवश्यक पाड़कर' 2017।
3. मशहूर साहित्याकर श्रीधर पराडकर का सम्मान समारोह",2017।
4. श्रीधर पराडकरए श्सपना साकार हुआश पृष्ठ संख्या 54।
5. श्रीधर पराडकरए श्श्रीलंकर प्रवास दैनन्दिनीश पृष्ठ संख्या 31।
6. श्रीधर पराडकरए शसिद्व योगीश्ए पृष्ठ संख्या 34।
7. श्रीधर पराडकर,"देशान्तर",प्रथम संस्करण 2015, प्रकाशक–अखिल भारतीय साहित्य परिषद न्यास नई दिल्ली।
8. माणिकचंद वाजपेयी,श्रीधर पराडकर,"मध्यभारत की संघ गाथा",2007,प्रकाशक–अर्चना प्रकाशन 18 दीनदयाल परिसर ई–2।